Roll No..... Total No. of Printed Pages : 6

Code No. : B02/209

Second Semester Online Examination, May-June, 2022

M.A. HINDI

Paper II

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

नोट : प्रत्येक इकाई में प्रत्येक प्रश्न का भाग *A* एवं *B* 'अतिलघू उत्तरीय प्रश्न' हैं, जिनके उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के भाग *C* 'लघू उत्तरीय प्रश्न' व भाग *D* 'दीर्घ उत्तरीय प्रश्न' के उत्तर निर्देशानुसार शब्द सीमा में दिये जाएँ।

इकाई-I

1. (A) श्रीमद्भागवत के भ्रमरगीत और सूरदास के भ्रमरगीत में प्रमुख अन्तर क्या है ? **2**

(B) भ्रमरगीत का नामकरण किस आधार पर किया गया है? **2**

(C) गोकुल सबै गोपाल–उपासी।

जोग अंग साधत जे ऊधो ते सब बसत ईसपुर कासी॥

यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रसरासी।

P.T.O.

अपनी सीतलताहि न छांड़त यद्यपि है ससि राहु गरासी॥

का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेमभजन तजि करत उदासी।

सूरदास ऐसी को बिरहिन माँगती मुक्ति तजे गुनरासी॥

(शब्द सीमा 200-250) **6**

अथवा

तौ हम मानै बात तुम्हारी।

अपनो बह्म दिखाबहु ऊधो मुकुट पितांबरधारी॥

भजि है तब ताको सब गोपी सहि रहि हैं बरु गारी।

भूत समान बतावत हमको जारहु स्याम बिसारी॥

जे मुख सदा सुधा अंचवत है ते विष क्यों अधिकारी।

सूरदास प्रभु एक अंग पर रीझि रहीं ब्रजनारी॥

(D) भ्रमरगीत परम्परा का वर्णन करते हुए इस परम्परा में सूरदास का स्थान निर्धारित कीजिए।

(शब्द सीमा 400-450) **10**

अथवा

सूरदास के भ्रमरगीत की विशेषताएँ लिखिए।

इकाई-II

2. (A) तुलसीदास को लोकनायक क्यों कहा जाता है ? **2**

(B) दास्य भाव की भक्ति का अर्थ समझाइए। **2**

(C) सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥

तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा॥

तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं॥

अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिना हरि कृपा मिलहीं नहिं सता॥

(शब्द सीमा 200-250) **6**

अथवा

लछिमन ज्ञान सरासन आन् सोखौं बारिधि बिसिख कृसानु॥

सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती॥

ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी॥

क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा॥

(D) तुलसीदास के 'रामचरित मानस' का सुन्दरकांड किन-किन कारणों से सुन्दर कहा जा सकता है ? विवेचना कीजिए। *(शब्द सीमा 400-450)* **10**

अथवा

"तुलसीदास का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।" इस कथन के संदर्भ में तुलसी की समन्वय भावना का वर्णन कीजिए।

इकाई-III

3. (A) "उड़ी जाए कित हूँ गुड़ी तऊ उड़ाइक हाथ।" इस पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। **2**

(B) बिहारी के दोहों की प्रमुख विशेषता लिखिए। **2**

(C) बहके सब जिय की कहत, ठौरू कुठौरु लखैं न।

छिन औरै छिन और से, ए छबि छाके नैन॥

फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टुटी लाज की लाव।

अंग अंग छवि सौंर मै भयौ भौंर की नाव॥

(शब्द सीमा 200-250) **6**

अथवा

बंधु भए कर दीन के, को तार्‌यौ रघुराइ।

तूठे तूठे फिरत हौ झूठे बिरद कहाइ॥

थोरैं ही गुल रीझते, बिसराई वह बानि।

तुमहूँ, कान्ह, मनौ भए आजकाल्हि के दानि॥

(D) बिहारी के भाव पक्ष और कला पक्ष की विशेषताएँ लिखिए। *(शब्द सीमा 400-450)* **10**

अथवा

"बिहारी का शृंगार वर्णन हिन्दी साहित्य में अप्रतिम है।" इस कथन को सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

इकाई-IV

4. (A) रीतिकालीन काव्यधाराओं का नाम लिखिए। **2**

(B) घनानंद स्वयं की प्रेम-साधना को मीन की प्रेम साधना श्रेष्ठ क्यों मानते हैं ? **2**

(C) भोर तें साँझ लौं कानन ओर निहारति बावरी नेकु न हारति।

साँझ तें भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सों इकतार न टारति।

जौ कहूँ भाव तो दीठि परै घन आनँद आँसुनि औसर गारति।

मोहन-सोहन जोहन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति॥ *(शब्द सीमा 200-250)* **6**

अथवा

पहिले अपनाय सुजान सनेह सों, क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू।

निरधार अधार दै धार मझार दई गहि बाँह कै बोरियै जू।

घनआनँद आपने चातकि कों गुन बाँधि लै मोह न छोरियै जू।

रस प्याय कै ज्याय, बढ़ाय कै आस, बिसास मैं यौं बिस घोरियै जू॥

(D) "घनानंद के काव्य की उत्कृष्टता का मुख्य कारण वाग्वैदग्ध्य और उक्तिवैचित्र्य है।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। *(शब्द सीमा 400-450)* **10**

अथवा

भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से घनानंद के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

❐ ❐ ❐ ❐ ❐ d ❐ ❐ ❐ ❐ ❐